सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय खिस्त

लेमेन इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल। (LEFI,Chennai)

सितम्बर-अक्तूबर, 2002

स्वर्ग की ज्योति

झलक

मैंने एक दिव्य दर्शन पाया, जिसके कारण मैंने अपने मसीह जीवन को पहले की अपेक्षा अधिक गंभीरता से लिया।

इस दिव्य दर्शन में, मैंने अपने आपको मसीही क्रिया कलापों में कार्यरत पाया। मैंने मसीह सभाओं में भाग लिया, सण्डे स्कूल में पढ़ाया और मैं कभी-कभार रोगियों से मिलने जाता था। इन सभी कार्यों में मैं ईमानदार था और मेरा पाखंड करने का कोई उद्देश्य नही था। बल्कि मैं अपने को चमकती रोशनी समझता था। अचानक एक दिन मैं गंभीर रूप से बीमार हो गया और मरने पर था। लेकिन मैं आत्मिक जीवन पाया मसीही था। तो मुझे इस बात का ज्ञान था कि मैं अपने उद्धारकर्ता की दया पर निर्भर कर सकता हूँ। तब मैं बेहोश हो गया और अचानक मैंने अपने आप को स्वर्ग में पाया। वहाँ पर परमेश्वर के संतो को देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई।

आरंभ में, मैं इस खुशी में खोया हुआ था कि मैं अब सुरक्षित और पाप के बंधन से मुक्त हूँ और यह सच्चाई थी। लेकिन बाद में, मैं उदास हो गया और अकेलापन महसूस करने लगा। मैं किसी तरह से इन संतो से मिल-जुल नहीं पा रहा था।

मेरे विचार, मेरे बीते हुए जीवन पर जाने

....स्वर्ग की झलक...पृष्ठ ३ पर

मृत्युंजय खिस्त
ON LINE

By Email:
post@lefi.org

At our Web Site:
http://lefi.org

एक गंभीर विषय, मेरे मन पर बोझ बना हुआ है। हम यीशु मसीह का नाम ऊँचा क्यों नही उठा रहे हैं। लोगों के चारों ओर रोशनी की बाढ़ नहीं ला पा रहे हैं कि लोग जान सकें यीशु ज्योति का कर्ता है, यीशु धार्मिकता का प्रभु और यीशु संसार की ज्योति है?

ऐसा क्यों है कि अपने चारों तरफ के अंधकार के बीच हमारी ज्योति दिखाई नहीं पड़ रही? यह तो गंभीर विरोधाभास है, यहाँ तक की यह प्रश्न उठता है कि क्या हमारे अन्दर ज्योति है? यदि ज्योति है, तो वह दिखनी चाहिए, क्यों चारों ओर अंधकार है। मैं यह समझ नहीं पाता कि लोग इतने तर्कहीन कैसे हो गए हैं। यदि हमारी चर्चे ज्योति हैं, तो हमारे चारों ओर अपराध दर कम होना चाहिए।

यदि तुम ज्योति हो, यदि हमारा परिवार ज्योति है, तो तब हमारे चारों ओर के लोग हमारे पास आकर कहें, 'कृपया, हमें वह रोशनी दो जो तुम्हें इतना सुरक्षित महसूस करवाती है और इतना असरदार, खुश, और संतुलन से भरा जीवन देती है।' संसार हमें देख कर यह कहे, 'हमें उस रोशनी की ज़रूरत है जो तुम्हारे अंदर है।' ऐसा क्यों है कि जिस प्रकार रोशनी साधारणतय आकर्षित करती है, हमारे जीवन में वैसा आकर्षण नहीं है?

यहाँ तक कि निशाचर भी किसी तरह ज्योति के निकट आना चाहते हैं। एक बार ऐसा हुआ कि एक रात का जानवर रोशनी के नज़दीक आ रहा था, थोड़ा डरते-डरते। मैंने देखा कि देर रात धरती पर सरकते हुए एक जानवर मेरे टेंन्ट से निकलती रोशनी को देख कर आ रहा था, मुझे ऐसा लगा कि वह एक पक्षी है। मैंने अपने से कहा,'यह क्या है?' मैं टेन्ट के बाहर गया और ध्यान से देखने पर पाया कि वह एक बहुत बड़ा बिच्छु है। मुझे नहीं मालूम कि किस कारण से वह बिच्छु रोशनी के पास आ रहा था। लेकिन मैंने अधिकतर ऐसा देखा है। अब एक जानवर का साधारण स्वभाव यह है कि वह रोशनी से दूर किसी अंधेरे कोने की खोज में चला जाए। लेकिन कई बार मैंने इन रात के जानवरों को रोशनी के निकट आते हुए देखा है। ताकि वे रोशनी में अपने शिकार को पकड़ सकें और मार कर खा सकें।

हम क्यों कहें कि हम मसीही हैं? हम ऐसा क्यों कहें कि हम वह लोग हैं जो रोशनी में चलते हैं, जैसे वह(यीशु मसीह) रोशनी में है? हमारे प्रभु में अंधकार नहीं है। हमें बताया गया है कि उसमें कोई अंधकार नहीं है। ठीक है, बताओ क्या हमारे अंदर अंधकार है? क्या हमारे अंदर धुंधलापन है? इस अंधकार के युग में हमारी ज्योति क्यों नहीं चमक रही है? अब यह विषय गंभीर दुख का विषय है। इस रोशनी की कमी के कुछ कारण हैं। पहला कारण तो मुझे यह नज़र आता है कि लोग प्रार्थना करना नहीं जानते हैं।

यदि किसी व्यक्ति की सांस रुक जाए, तो उसे एकदम मृत घोषित कर दिया जाता है। यदि कोई व्यक्ति अपने आप को मसीही कहे और विश्वास की सांस की ज़रूरत न महसूस करे, तो आप इस पर निश्चित हो सकते हैं कि वह दरवाज़े में ठोकी हुई कील की भांति मृत है। यह वार्तालाप जो अपने को मसीही घोषित करता है। बिना पर्याप्त प्रार्थना के, जिसके द्वारा ज्योति, उदारहण और आशिष आती है। ऐसा व्यक्ति, किसी भी तरह चुनौती का सामना नहीं कर सकता।

हम परमेश्वर के सामने मीठी सुगंध हैं। यदि हम परमेश्वर के सामने मीठी सुगंध हैं, तो हमारे बारे में कुछ बात अत्यंत आकर्षक होनी चाहिए। हम उस आत्मिक आकर्षण को खो रहे हैं। हम इतने घृणास्पद क्यों बने रहें? इतने घृणित क्यों हैं? ऐसे विरोधाभासी(पाखंडी) क्यों बनें कि हमारे अन्दर कुछ ओर, बाहर कुछ ओर हो। बाहर झूठे संकेत क्यों दें? यह बातें व्याख्या से परे हैं। तुम सच्ची मसीहत को इन विरोधाभासी स्थिति के साथ नहीं जी सकते।

मैं यह मानता हूँ कि हम प्रचारकों को पहले

.....ज्योति ...पृष्ठ २ पर

....ज्योति...पृष्ठ १ से

विश्वास के फल

पश्चाताप करना चाहिए। मैं यह मानता हूँ कि यदि प्रचारक सही है तो मंडली के बाकी सभी लोग सही होंगे। यदि तुम्हें परमेश्वर से नबूवत का वचन मिला हो तो लोगों का नकाब उतर कर पाप सामने आ जाऐगा। अंधकार का स्रोत जल्द ही पता चल जाएगा और उसका हल निकलेगा। लेकिन यदि प्रचारक बिना प्रार्थना के है और न ही नबूवत की रोशनी है। तब तुम निश्चय जान सकते हो कि ऐसे स्थान में, यह एक अंधकार से भरी काली परिस्थिति होगी। मैं यह विश्वास करता हूँ कि सारे संसार में आज यही स्थिति है।

सच्चाई तो यह है कि हम संजीवन की कमी के कारण, प्रार्थना की कमी के कारण और प्रसंग मंच पर विश्वस्तता की कमी के द्वारा संसार का नाश कर रहे हैं। हम अपने को मसीही क्यों कहें जब हमारी ज्योति वैसे नहीं चमक रही है कि लोग हमारे अच्छे कामों को देख कर, हमारे स्वर्गीय पिता(जीवित परमेश्वर) की महिमा नहीं करते?

जब ज्योति आती है, ज्योति अंधेरे कोनों को रोशन करती है। ज्योति प्रकाशन देती है। लोग अपने चारों ओर रोशनी चाहते हैं। क्या हम रोशनी के स्रोत हैं? क्या हम तब तक प्रार्थना करते हैं जब तक रोशनी न आ जाए? क्या हम तब तक प्रार्थना करेंगें जब तक रोशनी न आ जाए? क्या हम रोशनी पैदा कर रहे हैं? क्या हम रोशनी दे रहे हैं? क्या हम हर अंधेरे कोनों को रोशन कर रहे हैं? ओह, यह कितने दुख की बात है कि लोग मसीही कार्य में भी आराम की अभिलाषा करते हैं। और अपने लिए छोटी सी उपयुक्त जगह रखना चाहते हैं। और फिर उस उपयुक्त स्थान को बढ़ा कर आत्मसंतुष्टि में बढ़ते हैं और अपने आराम का ध्यान रखते हैं, यह शाप बन जाता है। क्या हमें अपने आराम के विषय में सोचने के लिए हमें बुलाया गया है? ओह, इस अंधकार भरे संसार में ज्योति का स्रोत ! ओह, दूसरों के सामने उदाहरण बनना। उन लोगों के लिए प्ररेणा बनना, जो प्ररेणा पाने के लिए पुकार रहे हैं।

अतः प्रिय पाठको, मैं इस नीरस, उदासीन और भावशून्य की स्थिति से समझौता नहीं कर सकता। हमें यीशु मसीह पर भरोसा रखना है। हमें उन सब अंधकार के स्रोतों से पश्चाताप करना है जिन्हें हमने अपने अंदर प्रवेश करने दिया है। हमें परमेश्वर की ओर वफादार बनना है।

- जोशुआ दानियल।

यशायाह (२७:३) 'मैं यहोवा उसका रखवाला हूँ, मैं प्रतिक्षण उसे जल से सींचता हूँ। मैं दिन-रात उसकी रक्षा करता हूं कि कोई उसको हानि न पहुंचाए।'

हम जानते हैं कि हम एक सर्वशक्तिमान उद्धारकर्ता की धरोहर हैं। वह हमारी सुरक्षा का ध्यान रखता है। वह हमें संभाले रखता है, हर क्षण हमें पालता है। जब मैं बाईबल पढ़ता हूँ और उन लोगों की जीवनियों को पढ़ता हूँ, जिनका जीवन परमेश्वर की वफादारी सिद्ध करता है, मेरा हृदय आभार से भर कर पिघलने लगता है। अब्राहम, युसुफ, मूसा और एलियाह ने संसार या संसार की महिमा को नहीं खोजा। उन्होंने जीवित परमेश्वर की खोज की और उसकी वफादारी को चखा। खास रूप से दानियल, नब्बे साल की उम्र में, अपने लोगों के लिए उपवास व प्रार्थना में लगा हुआ था, उसने परमेश्वर के दिये हुए वरदान को अपने लोगों के जीवन में पूरा होते हुए देखा। उनकी सहायता करने के लिए परमेश्वर ने क्षयर्क्ष को उठाया।

परमेश्वर हमारी सहायता करने के लिए अवरधर्मीयों को भी उठा सकता है। परमेश्वर हमारे लिए सहायता की वर्षा कर सकता है। हमारा दुश्मन हमारे ही अन्दर है न की बाहर। ध्यान रखो और प्रार्थना करो कि हमारा 'पुराना व्यक्तित्व' दुबारा न उठ सके। कोई भी बाहर से हमें हानि नहीं पहुँचा सकता। जब हम नम्र होते हैं और हमारा हृदय शुद्ध होता है तो स्वर्ग हमारे अन्दर से बहने के लिए साधन पाता है।

एलबर्ट आइंसटीन, ऐसे भौतिकी के सूत्र खोज सका जिसकी सहायता से अत्यधिक मात्रा में भौतिक उर्जा पैदा की जा सकती है। परमेश्वर तुम्हें उससे बढ़कर आत्मिक सूत्र देंगे और महान संदेश देंगे।

यूहन्ना (१४:२१) 'जिसके पास मेरी आज्ञाएं हैं और वह उनका पालन करता है, वही मुझ से प्रेम करता है, और जो मुझ से प्रेम करता है, उस से मेरा पिता प्रेम करेगा, और मैं उस से प्रेम करूँगा और अपने आप को उस पर प्रकट करूँगा।' यह महान सूत्र है। ऐसा हो कि यह वचन तुम्हारे जीवन में पूरे हों।

मैंने सोचा कि हम अपने घर की कुछ चीजें बेंचे, ताकि रीट्रीट आयोजित की जा सके, लेकिन मटके में आटा और तेल नहीं खत्म हुआ(अर्थात् परमेश्वर ने सारा प्रबंध किया)। मुझे कुछ भी बेचना नहीं पड़ा। प्रार्थना हमारा सच्चा सहारा है। परमेश्वर ने हमें ऐसे लोग दिये हैं, जो जिम्मेवारी उठाते हैं और बिना किसी चूक के उसका प्रबन्ध करते हैं।

एक व्यक्ति जो अपने स्वार्थ की खोज करता है। वह छोटा बनता है। यहाँ तक की उसका अस्तित्व मिट जाता है। एक आदमी जो अपने जीवन को परमेश्वर के राज्य की खोज में लगाता है, वह महान बनता जाता है और उसका हृदय इतना विशाल हो जाता है कि वह सारे संसार के भले की सोचने लगता है। विश्वास, युग के अंत की बातें देखता है। वह ऐसे सूत्रों को पाता है, जो 'समय के अंत' की बाते दिखाते है। मूसा ने मसीह के समय को देखा - व्यवस्थाविवरण(१८:१८) 'मैं उनके जाति भाइयों में से तेरे समान एक नबी खड़ा करूंगा, और अपना वचन उसके मुंह में डालूंगा, और जो जो आज्ञाएं मैं उसे दूंगा, वही वह उनको कह सुनाएगा। ' मूसा ने दूर से मसीह को देखा।

यशायाह (२७:६) 'आने वाले दिनों में याकूब जड़ पकड़ेगा, इस्राएल फूले-फलेगा और उसके फलों से समस्त संसार भर जाएगा।' ध्यान दो, इस्राएल फले फूलेगा, याकूब नहीं। याकूब(का अर्थ है धोखेबाज) का व्यक्तित्व बदल चुका है। सारी धरती उसके फल से भरेगी। परमेश्वर हमारे साथ है। ओर ऐसा हो कि हम दिन-रात हम परमेश्वर के प्रति सचेत रहें, यीशु के प्रति सचेत रहें। हमें ऐसी बातों को देखने की आशा करनी चाहिए, जो संसार ने कभी नहीं देखी हैं। परमेश्वर दिन-रात तुम्हें संभालेगा। इस वर्ष में तुम्हारे लिए भारी युद्ध होगा। लोगों को तुम्हारे स्वभाव में यह दिखना चाहिए कि तुम साधारण व्यक्ति नहीं हो। जो भी तुम्हें छूएगा वह भारी झटका खाएगा, क्योंकि परमेश्वर तुम्हें अपनी आँख की पुतली के समान रखेगा।

यह हमें दिया गया है कि हम परमेश्वर को सिद्ध करके दिखाएँ। हरेक जो यहाँ से जाए, दूसरों के लिए एक महान चुनौती बने। तुम केवल परमेश्वर के नज़दीक रहो और तुम्हारा फल सारे संसार को भरेगा। तुम्हारे प्रिय जन चाहे तुम्हारे सारे शब्दों का विरोध करें। जब तुम परमेश्वर के फलों से भरे होगे, तो वे तुमसे सीखने की इच्छा करेंगे। तुम्हारा विश्वास हरेक रूकावट को तोड़ेगा और विजयी होगा।

- स्वर्गीय एन दानियल।

.....स्वर्ग की झलक...पृष्ठ १ से

लगे और वह एक फिल्म की भाँति मेरे सामने से गुज़रने लगे। लेकिन उस पर एक छोर से दूसरे छोर तक लिखा था 'क्षमा किया गया', 'ओह, परमेश्वर की स्तुति हो', मैंने सोचा,'अब मेरे पाप का कोई लेखा जोखा नहीं है।'

मेरे जीवन के लेखे पर एक झलक ही से, मैं बहुत ही अशांत हो गया। लेखे में मेरे विचार, भावनाएँ, काम इत्यादि दिखाए गए। उसने दिखाया कैसे और किस उद्देश्य के लिए मैंने अपना समय, योग्यता और पैसा, जो परमेश्वर ने मुझे सौंपा था, अपने धरती के जीवन में, मैंने कैसे उसका प्रयोग किया।

अब मैंने संसार को वैसे देखा, जैसा परमेश्वर को दिखाई देता है - कामुकता से भरा हुआ, व्यभिचार, घृणा, जादूटोना, लड़ाई, झूठ, गप-शप, विद्रोह, लालच, घमण्ड, पाखंड इत्यादि से भरा हुआ। अब मैंने करोड़ों को पाप में अंधा हुआ, लड़खड़ाते हुए नरक के गड्डे में गिरते हुए देखा। मानो, कोई उनकी चिन्ता न कर रहा हो। मैंने उन लोगों की भी चीत्कार सुनी, जो पाप के बंधन में जकड़े हुए थे। लेकिन मानो कोई उनकी सहायता करने को तैयार नहीं था।

मैं बहुत ही व्यस्त था (अपने धरती के जीवन में) मज़ा उड़ाते हुए, यहाँ तक की धार्मिक मज़ा। अब मैंने अपने को देखा और अपने जीवन की रीति को वैसे, जैसे परमेश्वर ने देखा था, इस बात की समझ आने पर कि मैंने स्वार्थी जीवन जीया हैं, मैं अचानक व्याकुल हो उठा।

'काश ऐसा हो कि मैं केवल अपने व्यर्थ किये जीवन को वापस पा सकूं।' मैंने सोचा, लेकिन वैसा अब असंभव था। मुझे धरती पर मिला अवसर अब पूरा हो चुका था। 'हे, परमेश्वर ' मैंने सोचा,'मसीह को समर्पित एक और जीवन जीने के लिए मैं कुछ भी देने को तैयार हूँ।'

अचानक एक दिव्य संत मेरे पास आया। उसने कहा कि वह मुझसे वह कहानियाँ सुनने आया है कि कैसे मैनें आत्माओं को जीता और कैसे लोगों को मसीह के पास लाया और कैसे मैंने अपने जीवन में विजय पाई। मैं क्या कह पाता? मुझे तो केवल वह याद आ रहा था, मेरा आरामपरस्त और आसानी से बिताया जीवन। मैंनें अपना जीवन तो अपने को खुश करने में लगाया था। उसने अपने बेटे के विषय में पूछा। उसका बेटा विद्रोह से भरा हुआ था और मेरे घर के नज़दीक रहता था। 'क्या तुमने उससे मसीह के बारे में बात की? क्या उसके उद्धार पाने की आशा है?', उसने पूछा।

जैसे ही मैंने यह प्रश्न सुना, मेरा दिल डूबने लगा। मैं क्या जबाव दे पाता? मैं उस लड़के और उसकी समस्याओं के विषय में जानता था। लेकिन उसकी समस्याओं में न पड़ने की इच्छा के कारण मैंने उसे नज़रअंदाज़ कर दिया था। उस लड़के के पिता ने मेरी चुप्पी को देख कर जवाब भाँप लिया होगा। उसने मेरी ओर निराशा की भावना से देखा और मेरे उपर खेद किया और धीरे से मुड़कर मुझसे दूर चला गया।

और तब मैंने एक और दिव्य व्यक्ति को देखा। यह वो विधवा थी, जिसने सांसारिक जीवन में बड़ी कठिनाईयाँ सहीं थी, लेकिन वह सभी बच्चों को मसीह में ला सकी। केवल अपनी सबसे छोटी बेटी को छोड़ कर। उसने मुझे बताया कि उसकी बेटी को संसार की तड़क-भड़क ने भटका दिया था। 'यदि किसी ने उसे मसीह का प्यार दिखाया होता, तो शायद उसकी आँखें खुल जाती।' उसने कहा, 'तुम उसे जानते थे। क्या तुमने उससे बात करने के लिए समय निकाला?' एक बार फिर मैं चुप था। मैंने अपना सिर झुकाया हुआ था क्योंकि मैं उसकी उत्तर सुनने की आशा करती नज़रों को नहीं सह सकता था।

जब मैं अपने ही विचारों में लीन था, एक और व्यक्ति मेरे सामने आया। यह उस व्यक्ति का दिव्य शरीर था, जो धरती पर काले लोगों में से एक था। उसने अपना परिचय दिया और मुझसे उस मसीही समूहों के विषय में पूछने लगा, जिनके साथ मिलकर उसने सेवा की थी। और उसके साथियों के विषय में जिन्हें वह पीछे छोड़ आया था, जिन्हें मैं भी जानता था। 'क्या तुमने उनकी मदद करने की कोशिश की?',उसने पूछा, 'क्या तुम्हारा जीवन उनके लिए उदाहरण था? कृपया मुझे बताओ, क्या तुमने उन्हें उद्धार दिलवाने की कोशिश की?'

मैं इस समूह को जानता था। लेकिन मैंने कभी उनकी सहायता नहीं की और न ही उनका उत्साह बढ़ाया। मैंने यह तर्क दिया कि वे मेरे समूह से नहीं है। और मेरी विचारधारा नहीं रखते। और कई रीति से वे मुझसे भिन्न थे। लेकिन स्वर्ग की स्पष्ट ज्योति में मैंने देखा कि मैं सिर से पैर तक आत्मिक घमंड से भरा हुआ था। 'हे परमेश्वर?' मैने सोचा,'क्या यह स्वर्ग है?' क्या मेरे जीवन का स्वार्थ हमेशा-हमेशा के लिए मुझे कचोटता रहेगा? प्रभु मैं अपने को इतना नीच और नालायक महसूस कर रहा हूँ। यदि केवल मैं अपने जीवन को एक बार फिर जी सकूं।

मैं केवल व्यथा से भरा था और सोच रहा था कि क्या मैं स्वर्ग में शांति पा सकूंगा। मैंने अपने जीवन को बेकार के उद्देश्यों में और क्षणिक आनंद पाने में बिता दिया था। जबकि मेरा जीवन ऐसे कार्यों से भरा जा सकता था, जिनके बोने के द्वारा मैंने कभी न अंत होने वाले स्वर्गीय फलों को पाया होता।

तब मैंने एक अदभुत दृश्य देखा। युगों से, परमेश्वर के हजारों वफादार सेवक मेरे सामने से गुज़र रहे थे। वे देवताओं के समान दिख रहे थे और मैं उनके सौंदर्य और खुशी को पाने के लिए कुछ भी दाँव पर लगाने को तैयार था और फिर मैंने स्वंय राजाओं के राजा यीशु को देखा। उसने अपने वफादार सेवकों की ओर प्रेम, विश्वास और प्रशंसा की नज़र से देखा। मानो कह रहा हो, 'शाबास, मेरे वफादार भाईयो।' ओह, वह यीशु का निहारना। मैंने सोचा, यीशु से ऐसी एक मान्यता की निगाह पाने के लिए सौइयों बार जान गवाँना भी उचित है।

तब वह मेरी ओर मुड़े और मेरे ऊपर दया की दृष्टि करते हुए बोले, 'तुम इन लोगों के साथ बहुत ही कम समरसता पाओगे। जिन्होंने मेरी महिमा, विश्वास, और आदर के लिए अपनी जान को दाँव पर लगाया है।'

'हे परमेश्वर, हे परमेश्वर' मैंने पुकारा,'मेरी शर्म को छिपा। काश, मैंने तेरे दिये हुए अवसरों का सही उपयोग, तेरी सेवा के लिए किया होता। मैंने क्यों ऐसे खोखले उद्दश्यों और विलासता का पीछा किया? प्रभु मेरी सहायता कर।'

दया हुई, वह केवल एक दर्शन ही था। मैं जगा और मैंने पाया कि मैं अभी धरती पर ही था। मेरे पास अभी भी मौका था कि मैं अपना जीवन उसके लिए जीऊँ, जिसने अपना सब कुछ मेरे लिए दाँव पर लगा दिया था।

- विलियम बूथ।

सत्य की परख!

१ तीमुथीयुस (६:१०)

'क्योंकि धन का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है। कुछ लोगों ने इसकी लालसा में विश्वास से भटक कर अपने आप को अनेक दुखों से छलनी बना डाला है। '

पृष्ठ ३

एक जाने-माने सर्जन के बोल - डा. जयसिंह की कहानी

यह सब ऐसे आरंभ हुआ कि मेरे एक रिश्तेदार ने मुझे मसीही अराधना के लिए रविवार के दिन लैमेन इवैंजलिकल फैलोशिप में बुलाया। मैं इस बात की कल्पना भी नहीं कर पा रहा था कि मुझ जैसा व्यस्त सर्जन रविवार के बहुमूल्य घण्टे इन धार्मिक बातों मे लगाए, जबकि उस समय मैं ऐसा सोचता था कि मैं शल्य चिकित्सा का काम बड़ी मेहनत से करूँ और अधिक से अधिक पैसा कमा सकूँ। इसके अलावा मैंने परमेश्वर को खोजने की आवश्यकता भी नहीं समझी। क्योंकि मैं पहले से ही इस मद्रास शहर में एक जानामाना सर्जन माना जाता था और सांसारिक जीवन में भलिभाँति बसा हुआ था। इसके अलावा जीवन बड़ा आरामदायक था। क्योंकि मैंने और मेरे एक मित्र ने, जो फीजीशियन था, मिलकर अच्छा नाम कमाया था। इसके साथ ही हम दोनों के परिवार, एक बड़े आरामदायक सुविधाओं से भरे बंगले में इक्ठ्ठे रहते थे। इसलिए अपने रिश्तेदार को यह कहने में कि रविवार का दिन तो खेल-कूद और पिकनिक मनाने का दिन है, ज़रा सा भी नहीं हिचकिचाया। मेरे दिमाग के इन सब तर्कपूर्ण अवरोधक विचारों के बावज़ूद मैंने एक रविवार के दिन फैलोशिप के प्रार्थना हाल में कदम रखा। वह कैसा यीशु मसीह का अद्‌भुत प्रेम था, जो मुझे सही स्थान पर लेकर आया। जहाँ आकर मैं परमेश्वर के वचन की रोशनी पा सकता था। पहली बात जो प्रभु ने मुझ से कही वह यह थी। लैव्यव्यवस्था(१९:३०) 'तुम मेरे सब्त के दिनों को मानना और मेरे पवित्रस्थान का आदर करना। मैं यहोवा हूँ।' और मैंने रविवार के दिन अपनी मेडीकल प्रेक्टीस बंद कर दी। प्रभु की कृपा का यह पहला कार्य मेरे मन में हुआ - एक महान अश्चर्यकर्म।

मेरा जन्म दक्षिण भारत के एक प्राचीन मसीह शहर में हुआ। जहाँ मसीही कार्य सदियों पुराना है। साथ ही मैंने मसीही स्कूल और कालेजों में पढ़ाई की थी। हालाँकि मैं चारों ओर उत्साही मसीहत से घिरा हुआ था, परन्तु किसी ने यह बात सीधे से नहीं कही कि मुझे मसीह का व्यक्तिगत अनुभव होना चाहिए। मैं इस सामान्य बात तक को नहीं जानता था कि मेरे अन्दर आत्मा है जो अपने सृष्टिकर्ता जीवित परमेश्वर की ओर जवाबदेह है। मैं अपने आत्मा की ओर लापरवाह और अनन्तता से अनभिज्ञ था। मैंने अपने को संसार की लालसाओं को पूरा करने में अर्पित कर रखा था, जो मेरे लक्ष्य और जीवन के उत्साह का कारण बनते थे।

मैं खेलकूद के संसार में नाम कमाना चाहता था। मद्रास विश्वविधालय में मैंने कई खेलों में मेडल पाए थे। और जब उच्चस्तरीय सामाजिक समूहों में मेरी बड़ाई होती थी, तो मैं उल्लास से भर जाता था। और उस समूह के लोग मुझ से मित्रता की इच्छा रखते थे। मेरी उपलब्धियों के कारण, मैं एक उद्दमी व्यक्ति माना जाता था और मैं अपने आप से पूर्ण रूप से संतुष्ट था क्योंकि मैनें अपने जीवन में छाप छोड़ी थी। और, मैं यह नहीं समझ पा रहा था कि मैं अपने को धोखा दे रहा हूँ और केवल भ्रम के संसार में जी रहा हूँ।

मेरा गुप्त जीवन, एक दुखी और पाप से भरा जीवन था, लेकिन बिना ग्लानि के और अच्छी तरह से बाहरी उपलब्धियों से ढका हुआ था। अपने लड़कपन के दिनों से, मैं घमंड से भरा हुआ था। मैंने घर से पैसे चुरा कर, अपने ऊपर खोखली मौज मस्ती में उड़ाए थे। मेरी जानकारी बहुत से यौवन आयु के पापों से करवाई गई थी और गुप्त जीवन की दुष्ट आदतों से। मैंने शराब पीना आरंभ कर दिया था और शारीरिक लालसा की मुझ पर मज़बूत पकड़ थी। इससे बढ़कर मैंने धर्म संबंधी बातों को तुच्छ मानना शुरू कर दिया। चर्च जाने से मुझे घृणा थी। मेरे मन में धर्म संबंधी बातों के लिए कोई इज्जत नहीं थी। शैक्षिक सम्मान, कामकाज में सफलता और सांसारिक उन्नति में मुझे अंधा किया हुआ था। और मैं सोचता था कि सब कुछ मेरे साथ ठीक है। मैं रविवार के दिन अपने आपको बहुत ही व्यस्त रखता था, ७०-८० मील गाड़ी चला कर आपरेशन करने जाया करता था, खूब पैसा बनाकर रात होने तक घर वापस पहुंचता था।

ऐसे समय में, मैं जब आत्मिक और मौलिक भ्रष्टता में था, मेरी पत्नी धर्म के विषय में रुचि लेने लगी और मद्रास में लैमेन इवैंजलिकल फैलोशिप द्वारा एक चर्च में आयोजित सभाओं में भाग लेने लगी। सभाओं की समाप्ति के समय, मैं पहुँच कर अपनी पत्नी को वापस ले जाने आता था। लेकिन अनजाने में और विरोधी विचारों, तर्क और धर्म को त्यागने की इच्छा होते हुए भी, मैं अपने इस रिश्तेदार के निमंत्रण पर रविवार को लैमेन इवैंजलिकल फैलोशिप की अराधना सभा में पहुँच गया। वहाँ लोगों के बीच में बैठे मैंने परमेश्वर के सेवक भाई एन दानियल द्वारा परमेश्वर के वचन के प्रचार को सुना।

परमेश्वर की असीम दया के कारण मैं फैलोशिप की रविवार अराधना सभा में गया। क्योंकि सालों से मैने बाइबल नहीं पढ़ा था। इसलिए जो सत्य फैलोशिप में प्रचार किया जा रहा था। मुझे बड़ा विचित्र जान पड़ा। लेकिन धीरे-धीरे परमेश्वर के वचन ने मेरे हृदय में काम करना आरंभ कर दिया। परमेश्वर के अनुग्रह का अद्‌भुत कार्य मेरे हृदय में होना आरंभ होने लगा जोकि पाप और परमेश्वर की बातों का विरोध करने के कारण कठोर हो गया था। परमेश्वर के सेवक मन लगा कर मेरे लिए प्रार्थना करने लगे, इस कारण मैं वह बातें समझने लगा, जो परमेश्वर मेरे हृदय की स्थिति के बारे में मुझे बता रहे थे। वह कितना अद्‌भुत अनुग्रह परमेश्वर की ओर से मुझ पर हुआ कि धीरे-धीरे उसने मेरे भ्रष्ट गुप्त जीवन को मुझे दिखाया।

प्रभु यीशु ने, मुझे पहले दिखाया

कि कैसे मैं उसकी नज़र में एक लुटेरा हूँ। उनके वचन ने मेरे ऊपरी ढक्कन को उघाड़ दिया और मैं खुले रूप से दोषी घोषित हुआ खड़ा था। मेरा इन्कम टेक्स का लेखा सही नहीं था। मुझे इस गलती का भी भान हुआ कि कैसे मैंने सरकारी हस्पताल की दवाइयों का अपने व्यक्तिगत चिकित्साल्य में उपयोग किया था। उस दोष सिद्ध करती रोशनी ने मुझे दिखाया कि मैंने रेलवे विभाग को भी लूटा है। दया और न्याय के जीवित परमेश्वर ने मुझे बताया कि मैंने गरीब एँव अमीर दोनों को ऊँची फीस लेकर लूटा है। सिर्फ अपनी कमाई बढ़ाने के लिए मैंने ऐसे लोगों को झूठे मेडिकल स्रटिफिकेट जारी किये थे, जो अच्छे भले स्वस्थ थे। प्रभु ने मुझे बड़े मार्मिक रूप से दिखाया कि मैंने उन्हें अपने स्वार्थ की पराकाष्ठा में दशमाँश और भेंटों में लूटा है। यह एक प्रकार से समाज के विरूद्ध भी पाप था। मुझे अपने मन में गहरे पाप का बोध हुआ। जब मैंने यह समझा कि मैंने परमेश्वर की इस आज्ञा को तोड़ा, जो कहता है, 'तुम चोरी न करना।' प्रभु यीशु ने मुझे दिखाया कि इस प्रकार से मैंने उनकी सारी आज्ञाओं को तोड़ा है। इसलिए मैं बिलकुल शांति नहीं पा सकता।

पाप के बोध का बोझ लिए, भारी मन से मैं परमेश्वर के सेवक श्रीमान दानियल से आत्मिक सलाह और प्रार्थना पाने के लिए गया। जैसे एक डाक्टर अपने मरीज़ पर हाथ रखता है। श्रीमान दानियल ने मेरे सिर पर हाथ रखा और प्रार्थना की और कहा 'भाई, तेरे अन्दर आत्मिक अंधकार है। और इसी कारण तू नहीं समझ पा रहा है कि परमेश्वर तुझे और क्या बताना चाह रहे हैं।' उन्होने मेरे लिए प्रार्थना की और कहा कि तुम बाइबल अध्ययन करो और परमेश्वर के वचन पर मनन करो। श्रीमान दानियल मेरे लिए प्रार्थना करने लगे और उन्होंने यह आश्वासन दिलाया था कि रोशनी मेरे अंदर प्रवेश कर रही है। कुछ समय के बाद जब उन्होंने मेरे लिए प्रार्थना की। तब मुझे बताया कि अब तुम्हारा अंधकार दूर हो गया है। और जो कुछ परमेश्वर तुम्हें करने को कह रहे हैं, तुम उसे समझ पाओगे। इस गहरे पाप के बोध के आरंभ से प्रभु मे मुझे दिखाया कि किस तरह मैं, परमेश्वर और आदमी के सामने अपने विवेक को साफ करूँ। मैं इन्कम टैक्स अधिकारी के पास गया और अपने सारे बकाया कर का भुगतान किया और अपने लेखे को साफ किया। मैंने हस्पताल को, जहाँ से अपने निजी चिकित्साल्य पर उपयोग के लिए दवाईयाँ चुराई थीं। उसके लिए पैसा भरा। परमेश्वर के दशमांश को परमेश्वर को चुकाया।

जब मेरा घमंडी हृदय इस प्रेमी उद्धारकर्ता के सामने टूटने लगा और जब मैंने उससे आज्ञाएँ तोड़ने के लिए माफी माँगी, प्रभु मे मेरी सहायता करी कि अपने व्यभिचार के पाप को और परमेश्वर की पवित्रता और पावनता को ताक पर रख कर मैंने शराब पीयी थी, इन्हें स्वीकार करूँ। । मुझे कुछ पापों को अपनी माँ के सामने कबूल करना पड़ा। मैंने अपनी पत्नी से भी माफी माँगी। बिना कुछ छिपाए, मैंने अपने हृदय को परमेश्वर के सेवक के सामने भी खोला, जिसने बड़े प्रेम और धीरज के साथ सभी विषयों में मुझे सलाह दी कि कैसे मैं अपने विवेक को शुद्ध करूँ। तब बड़े अश्चर्य की बात हुई, मेरे घर में असरदार आत्म जागृति आ गई और मेरे बच्चे पश्चाताप करने लगे। ओह, कैसा आनंद मेरे दिल में भरने लगा। मैंने ऐसा आनंद पहले कभी नहीं चखा था। दिन में बाइबल के कई अध्याय पढ़ने में मुझे बहुत आनंद आने लगा और मुझे उत्कंठा हुई कि मैं बाइबल के कुछ पदों को याद करूँ। इस उत्साह के कारण मुझे अपने आत्मिक जीवन में एक प्रकार की संतुष्टि मिलने लगी और मैं इस खतरे में था, जैसे बिना पूरा छुटकारा पाए मानो आधे बने हुए घर में बस जाऊँ।

लेकिन प्रभु मुझे स्वंय अपने बाइबल के वचन के द्वारा दुतकारने लगे। एक दिन उन्होंने मुझे भजन संहिता (५०-१६) दिया 'परन्तु दुष्ट से परमेश्वर कहता है, मेरी विधियों का वर्णन करने का और मेरी वाचा को मुंह में लाने का तुझे क्या अधिकार है? ' इसके द्वारा परमेश्वर ने मुझे स्पष्ट चेतावनी दी कि अभी तक मुझमें परमेश्वर का सच्चा भय नहीं आया है। और मैंने दूसरों को परमेश्वर के वचन की शिक्षा देनी आरंभ कर दी है। मैंने अपने आप को नम्र किया और प्रभु से माफी माँगी। इसके बाद परमेश्वर के वचन की तलवार लैव्यव्यवस्था(१९:३०) 'तुम मेरे सब्त के दिनों को मानना और मेरे पवित्रस्थान का आदर करना। मैं यहोवा हूँ।', मेरी आत्मा पर पूरी जोर से चली। मैने परमेश्वर से दया की विनती की कि वह मुझे माफ कर दे क्योंकि मैंने परमेश्वर के दिन को बड़ा हलका समझा और उसके सामने प्रतिज्ञा की कि मैं आगे से उस दिन को पवित्र मानूँगा। एक दिन प्रभु ने मुझसे रोमियों (२:४)'क्या तू उसकी कृपा, सहनशीलता और धैर्य-रूपी धन को तुच्छ जानता है और नहीं जानता कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन-परिवर्तन की ओर ले आती है?' के इस वचन से बात की। मैने अपने आप को परमेश्वर के सामने नम्र किया और उससे इस बात के लिए माफी माँगी कि अपने बीते हुए जीवन में मैंने अपने घमंड के कारण परमेश्वर के अराधनालय और परमेश्वर के जनों का आदर नहीं किया। यह ऐसा समय था, जब मैं एक प्रकार के उत्साह से भरा हुआ था। तथा मैंने मद्रास में होने वाली हर मसीही सभा में, जहाँ तक संभव हो, जाना आरंभ कर दिया क्योंकि इसके द्वारा मुझे बहुत संतोष मिलता था। लेकिन मुझे परमेश्वर की चेतावनी मिली कुलुस्सियों (२:२३)'ये वे बातें हैं, अर्थात् धार्मिक आडम्बर, आत्मत्याग और कठोर शारीरिक यंत्रणा, जिनमें निसंदेह ज्ञान का नाम तो है, परन्तु इनसे शारीरिक वासनाओं को रोकने में कोई लाभ नहीं होता।' प्रभु ने पूरी रीति से स्पष्ट कर दिया था कि उन्होंने मुझे अभी तक स्वीकार नहीं किया है क्योंकि मैं अभी भी स्वैछिक अराधना के स्तर पर था। अपनी ही नम्रता और धर्म का केवल चोगा ही पहने था। प्रभु ने बड़े स्पष्ट रूप से दिखाया कि अभी भी मेरे अंदर वो बहुत कुछ था जो कि गलत था। इसलिए मैं सच्ची इच्छा से परमेश्वर के सामने अपने हृदय को सही करने लगा। जब मैं श्रीमान दानियल के पास सलाह माँगने गया, उन्होंने प्रार्थना की और कहा,'अभी भी तुम्हारे और परमेश्वर के बीच कुछ रुकावट बाकी है। तुम जाओ और प्रार्थना करो, मैं भी तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँगा।'

उस साल फैलोशिप में विद्यार्थीयों की रीट्रीट मद्रास में जारी थी। मैंने कुछ जवानों की गवाही को सुना और बड़ा उत्साहित हुआ। सभाओं के

एक तीव्र संदेश में श्रीमान दानियल ने यह पूछा, 'तुम्हारे और गैरमसीही के बीच क्या अंतर है? तुम चाहे एक डाक्टर या शिक्षक क्यों न हो।' यह प्रश्न गहराई से मेरे मन में बैठ गया। यह सच है कि मैंने अपने पापों से पश्चात किया था, लेकिन यह बात मैंने अपने मन में गहराई से नहीं समझी थी कि मैं कैसा दुष्ट और भयंकर पापी हूँ, अत्यंत दुष्ट और अनन्त सजा(नरक) का भागी। जब मैंने यह सोचा कि मैंने कैसे परमेश्वर के नाम का निरादर किया है और अपने परिवार के लिए रुकावट पैदा की है। मेरा मन अपनी दुष्टता को देख कर दुख से भर गया। जब मैंने घर जाकर उसके सामने घुटने टेके, मैं पूरी रीति से परमेश्वर के सम्मुख टूट गया। अपनी अयोग्यता के बोध से मेरा हृदय भर आया। मैं जानता था कि मैं एक दयनीय पापी हूँ, जो नरक की सजा के लायक है।

ऐसी स्थिति में मैने परमेश्वर से पूछा कि वह मुझे उस बड़ी दिवार को दिखाये जो मुझे उससे अलग किये हुए है। एकदम परमेश्वर ने मुझसे १कुरिन्थियों (६:१४,१७) 'अविश्वारियों के साथ असमान जुए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता का अधर्म से क्या मेल? या ज्योति की अन्धकार से क्या संगति? ', 'इसलिए प्रभु कहता है, उनमें से निकलो और अलग हो जाओ, और जो कुछ अशुद्ध है उसे न छुओ तो मैं तुम्हें ग्रहण करुंगा।' के द्वारा बात की। यह मेरे लिए बड़े उत्साह की बात थी। मैं अपने जीवन में परमेश्वर से एक नया मार्ग पाऊँगा। प्रिय प्रभु ने खोल कर मुझे समझाया कि वह इस वचन से क्या कहना चाहते हैं, 'बाहर निकल आ और अलग हो जा।' प्रभु चाहते थे कि मैं अपने मित्र के साथ डाक्टरी का धन्धा बन्द कर दूँ। जिसके साथ मिल कर मैं अभी काम कर रहा था। इसका यह अर्थ भी था कि मैं समुद्र के तट वाला घर भी छोड़ दूँ। मैंने प्रभु को कहा, 'हाँ, प्रभु मैं ऐसा ही करूँगा।' प्रभु ने मुझे एक साधारण-सा घर दिखाया, जिसे मैं किराये पर ले सकता था और मैंने अपने मित्र को समझाया कि मेरा प्रभु मुझे दूसरे प्रकार के डाक्टरी के काम के लिए बुला रहा है। बिना किसी गलतफहमी के हम एक दूसरे से अलग हो गए।

परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नए घर में जाने के बाद मैंने प्रभु से पूछा,'प्रभु, यदि अब भी तेरे और मेरे बीच कोई रूकावट है तो बता, मैं उसे हटाने को तैयार हूँ।' मुझे परमेश्वर के आत्मा से गहरा आश्वासन मिला और स्वंय प्रभु ने मुझे उससे अलग करने वाली दिवार को हटा दिया। एक शाम, जब मैं प्रभु के साथ अकेला था, प्रभु ने मेरे साथ ज़कर्याह (३:४) 'उसके मैले वस्त्र उतार फेंको। तब उसने उससे कहा, देख मैंने तेरा अधर्म तुझ से दूर कर दिया है कि तुझे उत्सव का वस्त्र पहनाऊं।' से बात की। महान आनंद और खुशी से मेरा मन भर गया। पहली बार मैंने अनुभव किया कि प्रभु स्वंय अब मेरे अन्दर निवास करने लगा। मैं प्रभु से और उसके वचन से गहराई से प्रेम करने लगा। दूसरों को भी शांति के मार्ग पर लाने में प्रभु ने मेरी सहायता की।

कुछ समय बाद प्रभु ने मुझसे मेरे नए कार्य के बारे में बात करनी आरंभ की। १ इतिहास (२८:१०) 'इसलिए अब ध्यान रख क्योंकि यहोवा ने पवित्रस्थान के निमित एक भवन बनाने के लिए तुझे चुना है, अतः साहस करके काम में लग जा।' प्रभु ने मुझे कई वादे दिये, क्योंकि वह विश्वास के मार्ग में मेरी अगुवाई कर रहा था। इससे बढ़कर प्रभु ने यह आशिष दी कि मेरे घर में सभी ने पश्चाताप कर, मन फिराया। मसीह(यीशु) मेरे घर और जीवन का केन्द्र बन गया। तब मैंने समझा कि परमेश्वर की आज्ञा कितनी महान और पवित्र है, जो मुझे उससे मिली।

नए किराये के मकान में हमने अपना क्लीनिक खोला और उसका नाम रखा 'सुसमाचार चिकित्साल्य'। इसका अभिप्राय यह था कि उद्धारकर्ता के प्रेम का सुसमाचार और चिकित्सा सहायता, दोनो रोगियों को दी जाए। बहुत से रोगी इलाज के लिए आने लगे। लगभग १५०-२०० लोग प्रतिदिन हमारे चिकित्सालय में आते हैं। हमारे मसीह भाई और बहनें इस चिकित्साल्य में मेरी सहायता कर रहे हैं। हम रोगियों को परमेश्वर का संदेश दे रहे हैं। और चिकित्साल्य में पहले से रिकार्ड किये मसीह संदेश बजाते हैं कि रोगी प्रभु का वचन सुन सकें। हम उन्हें संसार के उद्धारकर्ता(यीशु मसीह) के प्रेम और शक्ति की गवाही देते हैं। हम उन्हें रविवार की अराधना सभा के लिए भी आमंत्रित करते है। हमारी टीम के सदस्य इन रोगियों की समस्याएँ जो उन्हें दबाए हुए हैं, उनके बारे में सहायता करते हैं। हमारे चिकित्साल्य में ही हमारे भाई दुष्टआत्माओं से ग्रस्त लोगों के लिए प्रार्थना भी करते हैं।

हर रविवार और शनिवार को हमारे हाल में सभाएँ होती हैं। लगभग छह सौ लोग आकर प्रभु का वचन सुनते हैं। लगभग हम शाम को हम नज़दीकी कालोनियों में गरीबों को प्रभु का वचन देने जाते हैं। छुट्टी के दिनों में हम नज़दीकी गांवों में जाते हैं, जहाँ पहले कभी सुसमाचार प्रचार नहीं हुआ है। शाम के समय हम चिकित्साल्य नहीं खोलते। हमारे चारों ओर गरीबों और ज़रूरतमंदों की अधिक से अधिक सहायता करने में प्रभु हमें सामर्थ दे रहा है। कुछ टूटे हुए घर वापस जुड़ रहे हैं और दुष्टआत्माओं से ग्रस्त लोगों ने छुटकारा पाया है। प्रभु बहुत से नशाखोरों को छू कर नशाखोरी से छुटकारा दे रहा है। हम महसूस करते हैं कि हमारे बीच सबसे अधिक ज़रूरत नौजवान लोगों के बीच है। उनमें से बहुतों को परमेश्वर के सम्मुख पूर्ण समर्पण करना बाकी है। मेरी पत्नी अनपढ़ लोगों और उनके परिवारों को शिक्षा देती है। दूसरों ने मेरे लिए जो प्रार्थनाएँ की हैं, मैं उसके लिए बहुत आभारी हूँ।

एक समय था जब मैं रविवार के दिन पैसा कमाने जाया करता था। लेकिन अब प्रभु मेरी सहायता कर रहा है कि मैं जाऊँ प्रचार करूँ और आत्माएँ जीतूं। प्रभु टूटे घर जोड़ रहा है। बहुत से नाममात्र मसीही और गैर-मसीहीयों का हृदय परिवर्तन हो रहा है और वे नया जीवन जी रहे हैं।

- डा जयसिंह।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दिजिए।